Module-1 Choice: An Economic Problem

चयन की समस्या की तरफ जिस अर्थशास्त्री ने ध्यान आकर्षित किया था वह प्रो० रोबिन्स थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम "An Essay on the Nature & Significance of Economic Science" था। इस पुस्तक में उन्होंने यह विचार व्यक्त किया था कि "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यों और वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधनों के बीच आपसी सम्बन्ध के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। रोबिन्स के अनुसार मनुष्य की आवश्यकताएं बहुत सारी होती हैं और उनकी सन्तुष्टि के साधन सीमित होते हैं जिससे मनुष्य अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है। और फिर मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की तीव्रता के अनुसार उनकी जरूरतों को पूरा करता है यही मनुष्य के सामने चयन की समस्या है जिसे आर्थिक समस्या कहा जाता है।

प्रो० एरिक रोल के अनुसार "आर्थिक समस्या मूलतः चयन की आवश्यकता में से उत्पन्न होने वाली समस्या है। यह वह चयन है जिसमें वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। यह संसाधनों के मितव्ययी उपयोग की समस्या है",

प्रो० लेफ्टविच के अनुसार "आर्थिक समस्या का सम्बन्ध वैकल्पिक मानवीय आवश्यकताओं में सीमित साधनों का प्रयोग करने और इन साधनों का इस दृष्टि से उपयोग करने से है कि आवश्यकताओं की अधिकतम सम्भव सन्तुष्टि हो सके।

सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सीमित साधनों के प्रयोग से सम्बन्धित चयन की समस्या ही आर्थिक समस्या कहलाती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर चयन की समस्या क्यों उत्पन्न होती है। यह आर्थिक समस्या निम्न कारणों से उत्पन्न होती है

(1) असीमित आवश्यकताएं — मनुष्य की आवश्यकताएं अनन्त हैं और उनको पूरा करने का साधन सीमित है: एक आवश्यकता की पूर्ति हो जाने के बाद दूसरी नई आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है. अतः मनुष्य की सभी जरूरतों को पूरा नहीं किया जा सकता है।

(2) आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर — आवश्यकताएं तीव्रता की नजर से भी भिन्न होती हैं। अर्थात् अलग-अलग मनुष्य के लिए आवश्यकताओं की तीव्रता अलग-अलग होती है। कुछ के लिए कुछ महत्वपूर्ण है तो कुछ के लिए कुछ दूसरा। अतः महत्व के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को प्राथमिकता के क्रम में रखता है।

(3) आवश्यकताओं की पूर्ति के सीमित साधन — साधन की सीमितता से तात्पर्य

Oxford

Scanned with CamScanner

है कि जितनी मात्रा में इन साधनों की मांग है उनकी तुलना में यह कम उपलब्ध है। जो वस्तु मनुष्य की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की क्षमता रखती है वह साधन कहलाती है। और यह साधन दो प्रकार के होते हैं (1) प्राकृतिक एवं (2) मनुष्य द्वारा निर्मित। पर दोनों ही प्रकार की साधन सीमित होते हैं।

(4) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग — साधन न केवल सीमित होता है वरन् इनके वैकल्पिक उपयोग भी होते हैं जैसे बिजली का प्रयोग बिजली का पंखे चलाने में, कूलर में फ्रिज रोशनी इत्यादि काम में आते हैं यहां भी समस्या उत्पन्न होती है कि किस का पहले प्रयोग किया जाये।

(5) चयन या चुनाव की समस्या — यह स्पष्ट होता है कि कोई भी व्यक्ति, परिवार या देश अपने सीमित साधन से अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है। उसके सामने यह समस्या बनी रहती है कि वह अपने कौन से साधन को कितनी मात्रा में कौन सी जरूरत को पूरा करने में लगाये। ऐसी अवस्था में उसके सामने चयन की समस्या उत्पन्न हो जाती है और चयन की समस्या ही आर्थिक समस्या कहलाती है।

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि चयन की समस्या ही आर्थिक समस्या है। यदि मानवीय आवश्यकताओं की तरह साधन भी असीमित होते तो चयन की समस्या उत्पन्न नहीं होती। दूसरे शब्दों में, साधनों की दुर्लभता ही सभी आर्थिक समस्याओं की जननी है। "अर्थशास्त्र का उदय तभी होता है जब चयन की समस्या या दुर्लभता की समस्या उत्पन्न होती है"। इस प्रकार अर्थशास्त्र आर्थिक समस्याओं का अध्ययन है।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि क्या कोई ऐसी अर्थव्यवस्था या देश है जहां आर्थिक समस्या न पाई जाती हो।

आर्थिक समस्या का न पाया जाना दो स्थितियों में सम्भव हो सकता है। (1) जब हमारी आवश्यकताएं सीमित (2) जब हमारे साधन असीमित हो। परन्तु व्यावहारिक जीवन में ये दोनों ही स्थितियां देखने को नहीं मिलती है

प्रो० जे०के० गैलब्रेथ ने अपनी पुस्तक 'The Affluent Society' में बताया है कि अमेरिका जैसे सम्पन्न राष्ट्रों में सामान्य सीमितता की समस्याओं के स्थान पर सम्पन्नता या विपुलता की समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। इस सम्बन्ध में यह कहना उचित होगा कि वहां निर्धनता का प्रभाव काफी कम हो गया है लेकिन 'चुनाव की समस्या' वहां भी बनी हुई है, कारण यह है कि नागरिकों को यह भी तय करना होता है कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाय, किन वस्तुओं का उपयोग किया जाय, माल का वितरण किस तरह किया जाय आदि।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं चूंकि सीमितता हर स्थान एवं हर देश में पायी जाती है। इसलिए आर्थिक समस्या सभी देशों में और सभी हालातों में पाई जाती है। अर्थात विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जिसमें कोई आर्थिक समस्या न पाई जाती हो।

Scanned with CamScanner